C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×3=6) (1×2=2) 8

हमें स्वराज्य तो मिल गया, परन्तु सुराज्य अभी हमारे लिए एक सुखद स्वप्न ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना हमने अभी तक नहीं सीखा। श्रम का महत्त्व और मूल्य हम जानते ही नहीं। हम अब भी आराम-तलब हैं। हाथों से यथेष्ट काम करने में रूचि नहीं है। हाथों से काम करने को हम हीन समझते हैं। हम कम से कम काम द्वारा जीविका चाहते हैं। हम यही सोचते रहते हैं कि किस तरह काम से बचा जाए। यह दूषित मानसिकता राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है और वहाँ से हटती नहीं है। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते और समाज से हम जितना पा रहे हैं या लेना चाहते हैं उससे कई गुना अधिक उसे अपने कठोर श्रम से नहीं देते, देश आगे नहीं जा सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणत नहीं हो सकता।

क) देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

ख) कौन-सी दूषित मानसिकता देश की आत्मा में जा बैठी है?

ग) स्वराज्य सुराज्य में कब परिणत होगा?

घ) हमें किस बात में रूचि नहीं है?

ङ) उपरोक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

भूल गया है तू अपना पथ,
और नहीं पंखों में भी गति,
किंतु लौटना पीछे पथ पर अरे, मौत से भी है बदतर।
खग ! उडते रहना जीवन भर!

मत डर प्रलय झकोरों से तू,
बढ़ आशा हलकोरों से तू,
क्षण में यह अरि-दल मिट जायेगा तेरे पंखों से पिस कर।
खग ! उडते रहना जीवन भर!

यदि तू लौट पडेगा थक कर,
अंधड काल बवंडर से डर,
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझ को हँस-हँस कर।
खग ! उडते रहना जीवन भर!

और मिट गया चलते चलते,
मंजिल पथ तय करते करते,
तेरी खाक चढाएगा जग उन्नत भाल और आखों पर।
खग ! उडते रहना जीवन भर !

- 'नीरज'

1. पथ पर चलते-चलते पीछे लौटना किससे बदतर है?
2. किससे पिसकर अरिदल मिट जाएगा?
3. कवि 'नीरज' ने जीवनभर उड़ते रहने की प्रेरणा किसे दी है?

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी।
सुख दु:ख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी।
कब फूटा गिरी के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति हैं, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती है गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति है जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।
निर्झर कहता है - बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है - बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।
चलना है - केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर से क्या अभिप्राय है? कवि ने जीवन को निर्झर क्यों कहा है?
2. सुख-दुख के 'दो तीर' से कवि का क्या आशय है?

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) वह सवेरे उठते ही नहा-धोकर मंदिर चला जाता है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

(ख) वह कार तेजी से आकर खंभे से टकरा गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ग) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरु की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांक्ति पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) मैं जब वहाँ पहुँचा तो वर्षा हो रही थी।

(ख) वसन्त ऋतु सुहावनी होती है।

(ग) तुम्हें भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।

(घ) पानवाला खुशमिजाज आदमी था।

(ङ) अरे, तुम भी आ गए!

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) मैं दरवाज़ा नहीं खोल सकता - कर्मवाच्य में बदलिए।

(ख) आओ आज नहर में तैर लें - भाववाच्य में बदलिए।

(ग) रमा क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है - भाववाच्य में बदलिए।

(घ) श्रध्दालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है- कर्तृवाच्य में बदलिए।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

1. 'राम को रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाईं।
   याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेक रही पल टारति नाहिं।

2. विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे
   गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।
   ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे
   कीन्हीं भली रघुनायक जू जो कृपा करि कानन को पगु धारे।।

3. रे अश्वसेन ! तेरे अनेक वंशज हैं छिपे नरों में भी,
   सीमित वन में ही नहीं, बहुत बसते पुरग्राम-घरों में भी।
   ये नर-भुजंग मानवता का, पथ कठिन बहुत कर देते हैं,
   प्रतिबल के वध के लिए नीच, साहाय्य सर्प का लेते हैं।

4. क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा;

है स्वच्छन्द-सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं, नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से, कितने शांत और चुपचाप!

प्र.8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1+2+2=5

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारू की छाया में खड़े हों।

(क) 'परिमल' किसका नाम है?

(ख) 'फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

क) काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

ख) लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

ग) बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

घ) इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) माँ बिटिया को किस अवसर पर यह सीख दे रही है और क्यों?
(ख) आग के विषय में माँ के कथन का क्या अभिप्राय है?
(ग) माँ ने आभूषणों को स्त्री जीवन के बंधन क्यों कहा है?

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) कवि ने 'श्रीबज़्रदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें ससांर रूपी मंदिर दीपक क्यों कहा है?
(ख) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर श्रीराम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
(ग) 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?
(घ) संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

प्र. 12. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाईयों का मुकाबला करते है। सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय निबंध पर लिखिए : 10

जहाँ चाह वहाँ राह

अथवा

'कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण'

प्र. 14. हिन्दी-दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए। 5

अथवा

दसवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? अपने भावी कार्यक्रम के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमुना) तैयार कीजिए : 5

गुलाब जामुन मिक्स का विज्ञापन तैयार कीजिए।

C.B.S.E Board

कक्षा : 10

हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।
2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खंड - क

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×3=6) (1×2=2) 8

हमें स्वराज्य तो मिल गया, परन्तु सुराज्य अभी हमारे लिए एक सुखद स्वप्न ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना हमने अभी तक नहीं सीखा। श्रम का महत्त्व और मूल्य हम जानते ही नहीं। हम अब भी आराम-तलब हैं। हाथों से यथेष्ट काम करने में रूचि नहीं है। हाथों से काम करने को हम हीन समझते हैं। हम कम से कम काम द्वारा जीविका चाहते हैं। हम यही सोचते रहते हैं कि किस तरह काम से बचा जाए। यह दूषित मानसिकता राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है और वहाँ से हटती नहीं है। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते और समाज से हम जितना पा रहे हैं या लेना चाहते हैं उससे कई गुना अधिक उसे अपने कठोर श्रम से नहीं देते, देश आगे नहीं जा सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणत नहीं हो सकता।

क) देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें श्रम का मूल्य पहचानकर कठोर श्रम करना चाहिए।

ख) कौन-सी दूषित मानसिकता देश की आत्मा में जा बैठी है?

उत्तर : हम आराम-तलब बन गए हैं। हाथों से काम करने में हमारी रूचि नहीं रह गई है उससे हम हीनता अनुभव करते हैं। हम कम काम और अधिक आराम के आदि हो गए हैं। कामचोरी और आराम करने की ये दूषित मानसिकता ही देश की आत्मा में जा बैठी है।

ग) स्वराज्य सुराज्य में कब परिणत होगा?

उत्तर : देश में सुराज्य लाने के लिए लोगों में परिश्रम के प्रति आदर भाव जगाना जरूरी है। हमें श्रम का मूल्य पहचानना होगा और हाथों से काम करने की आदत डालनी होगी। कठोर परिश्रम से ही स्वराज्य सुराज्य में परिणत होगा।

घ) हमें किस बात में रूचि नहीं है?

उत्तर : हमें हाथों से काम करने में रूचि नहीं है।

ङ) उपरोक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : परिश्रम का महत्त्व।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

भूल गया है तू अपना पथ,
और नहीं पंखों में भी गति,
किंतु लौटना पीछे पथ पर अरे, मौत से भी है बदतर।
खग ! उडते रहना जीवन भर!

मत डर प्रलय झकोरों से तू,
बढ़ आशा हलकोरों से तू,
क्षण में यह अरि-दल मिट जायेगा तेरे पंखों से पिस कर।

खग ! उडते रहना जीवन भर!

यदि तू लौट पडेगा थक कर,
अंधड काल बवंडर से डर,
प्यार तुझे करने वाले ही देखेंगे तुझ को हँस-हँस कर।
खग ! उडते रहना जीवन भर!

और मिट गया चलते चलते,
मंजिल पथ तय करते करते,
तेरी खाक चढाएगा जग उन्नत भाल और आखों पर।
खग ! उडते रहना जीवन भर !

- 'नीरज'

1. पथ पर चलते-चलते पीछे लौटना किससे बदतर है?
   उत्तर : पथ पर चलते-चलते पीछे लौटना मौत से बदतर है।

2. किससे पिसकर अरिदल मिट जाएगा?
   उत्तर : खग के पंखों से पिसकर अरिदल मिट जाएगा।

3. कवि 'नीरज' ने जीवनभर उड़ते रहने की प्रेरणा किसे दी है?
   उत्तर : कवि 'नीरज' ने जीवनभर उड़ते रहने की प्रेरणा खग को दी है।

प्र. 3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी।
सुख दु:ख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी।
कब फूटा गिरी के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति हैं, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।

धुन सिर्फ़ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती है गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।
निर्झर में गति है जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।
उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।
निर्झर कहता है - बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।
यौवन कहता है - बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।
चलना है - केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।
आरसी प्रसाद सिंह

1. निर्झर से क्या अभिप्राय है? कवि ने जीवन को निर्झर क्यों कहा है?

उत्तर : निर्झर का अर्थ है झरना। कवि ने जीवन को झरना कहा है क्योंकि जिस प्रकार झरना बिना रुके अबाध गति से बढ़ता जाता है उसी प्रकार जीवन भी बिना रुके लक्ष्य की ओर बढ़ता ही रहता है। इसी प्रकार मानव का जीवन भी गतिशील रहने में ही सार्थक होता है।

2. सुख-दुख के 'दो तीर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : सुख-दुख के विषय में कवि ने समझाया है कि जिस तरह निर्झर दो किनारों के बीच बहते हुए आगे बढ़ता है उसी तरह मनुष्य के जीवन में सुख और दुख दो किनारे हैं जीवन इन्हीं के बीच चलता रहता है। मनुष्य का जीवन हमेशा एक जैसा नहीं रहता है, सुख और दुख का आना जाना लगा रहता है। जिस प्रकार रात के बाद सुबह होती है, उसी प्रकार दुख के बादल छट जाते है और सुख के दिन आते हैं।

खंड - ख

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(क) वह सवेरे उठते ही नहा-धोकर मंदिर चला जाता है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जैसे ही वह सवेरे उठता है, वैसे ही नहा-धोकर मंदिर चला जाता है।

(ख) वह कार तेजी से आकर खंभे से टकरा गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वह कार तेजी से आई और खंभे से टकरा गई।

(ग) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरु की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य - उन्होंने शहनाई बजानी शुरु की और सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए।

प्र. 5. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांक्ति पदों का परिचय दीजिए : 1x4=4

(क) <u>मैं</u> जब वहाँ पहुँचा तो वर्षा हो रही थी।

उत्तर : मैं - उत्तमपुरुष वाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(ख) <u>वसन्त</u> ऋतु सुहावनी होती है।

उत्तर : वसन्त ऋतु - व्यक्तिवाचक, संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन।

(ग) <u>तुम्हें</u> भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।

उत्तर : तुम्हें - सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) पानवाला <u>खुशमिजाज</u> आदमी था।

उत्तर : खुशमिजाज - विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ङ) <u>अरे</u>, तुम भी आ गए!

उत्तर : अरे - विस्मयादि बोधक, एकवचन, पुल्लिंग।

प्र. 6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x4=4

(क) मैं दरवाज़ा नहीं खोल सकता - कर्मवाच्य में बदलिए।

उत्तर : मुझसे दरवाज़ा नहीं खोला जा सकता।

(ख) आओ आज नहर में तैर लें - भाववाच्य में बदलिए।

उत्तर : आओ, नहर में तैरा जाए।

(ग) रमा क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है - भाववाच्य में बदलिए।

उत्तर : रमा से क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठा जाता।

(घ) श्रध्दालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है- कर्तृवाच्य में बदलिए।

उत्तर : श्रध्दालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।

प्र. 7. निम्नांकित काव्यांशो में प्रयुक्त रस पहचानिए : 1x4=4

1. 'राम को रूप निहारति जानकी, कंगन के नग की परछाईं।
याते सबै सुधि भूलि गई, कर टेक रही पल टारति नाहिं।
उत्तर : संयोग श्रृंगार

2. विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।
ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे
कीन्हीं भली रघुनायक जू जो कृपा करि कानन को पगु धारे।।
उत्तर : हास्य रस

3. रे अश्वसेन ! तेरे अनेक वंशज हैं छिपे नरों में भी,
सीमित वन में ही नहीं, बहुत बसते पुरग्राम-घरों में भी।
ये नर-भुजंग मानवता का, पथ कठिन बहुत कर देते हैं,
प्रतिबल के वध के लिए नीच, साहाय्य सर्प का लेते हैं।
उत्तर : वीर रस

4. क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा;
है स्वच्छन्द-सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा?
बंद नहीं, अब भी चलते हैं, नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकान्त भाव से, कितने शांत और चुपचाप!
उत्तर : अद्भुत रस

प्र.8. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 1+2+2=5

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारू की छाया में खड़े हों।

(क) 'परिमल' किसका नाम है?

उत्तर : 'परिमल' एक साहित्यिक संस्था का नाम है।

(ख) 'फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।' - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार एक उदास शांत संगीत को सुनते समय हमारा मन गहरे दुःख में डूब जाता है, वातावरण में एक अवसाद भरी निस्तब्ध शांति छा जाती है और हमारी आँखें अपने-आप ही नम हो जाती हैं, ठीक वैसी ही दशा फ़ादर बुल्के को याद करते समय हो जाती है।

(ग) फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : प्राय: संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं। जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों के परिपाटी का निर्वाहन न कर, वे सबके सुख-दुख में शामिल होते। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना नित्य प्रति काम था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्क़े ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

क) काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर : काशी की अनेकों परम्पराएँ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। पहले काशी खानपान की चीज़ों के लिए विख्यात हुआ करता था। परन्तु अब वह बात नहीं रह गई है। कुलसुम की छन्न करती संगीतात्मक कचौड़ी और देशी घी की जलेबी आज नहीं रही है। संगीत, साहित्य और अदब की परंपरा में भी धीरे-धीरे कमी आ गई है। अब पहले जैसा प्यार और भाईचारा हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच देखने को नहीं मिलता। गायक कलाकारों के मन में भी संगत करने वाले कलाकारों के प्रति

बहुत अधिक सम्मान नहीं बचा है। काशी की इन सभी लुप्त होती परंपराओं के कारण बिस्मिल्ला खाँ दु:खी थे।

ख) लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर : लेखक के अचानक डिब्बे में कूद पड़ने से नवाब-साहब की आँखों में एकांत चिंतन में खलल पड़ जाने का असंतोष दिखाई दिया। ट्रेन में लेखक के साथ बात-चीत करने के लिए नवाब साहब ने कोई उत्साह नहीं प्रकट किया। लेखक से कोई बातचीत भी नहीं की और न ही उनकी तरफ देखा। इससे लेखक को स्वयं के प्रति नवाब साहब की उदासीनता का आभास हुआ।

ग) बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक थे। वे अपनी कला के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उन्होंने जीवनभर संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की इच्छा को अपने अंदर जिंदा रखा। वे अपने सुरों को कभी भी पूर्ण नहीं समझते थे इसलिए खुदा के सामने वे गिड़गिड़ाकर कहते - "मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।" खाँ साहब ने कभी भी धन-दौलत को पाने की इच्छा नहीं की बल्कि उन्होंने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वे कहते थे - "मालिक से यही दुआ है - फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।

घ) इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर : 'भटियारखाना' शब्द भट्टी (चूल्हा) से बना है। यहाँ पर प्रतिभाशाली लोग नहीं जाते हैं लेखिका के पिता का मानना था रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने-खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। संभवत: इसलिए लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित किया होगा।

प्र. 10. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2+2+1

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) माँ बिटिया को किस अवसर पर यह सीख दे रही है और क्यों?

उत्तर : माँ कन्यादान के अवसर पर अपनी बेटी को यह सीख दे रही है। वह चाहती है कि उसकी बेटी उसके अनुभवों से शिक्षा ग्रहण करे तथा सशक्त नारी के रुप में जीवन व्यतीत करे।

(ख) आग के विषय में माँ के कथन का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : माँ के कथन का अभिप्राय है कि उसकी बेटी को मानसिक रुप से अत्यधिक दृढ़ होना चाहिए। उसे याद रखना चाहिए कि

अग्नि रोटी पकाने के लिए होती है, उसे विपरीत परिस्थितियों में जलने की बात कभी नहीं सोचनी चाहिए।

(ग) माँ ने आभूषणों को स्त्री जीवन के बंधन क्यों कहा है?

उत्तर : माँ ने कहा कि सामान्य आभूषण स्त्री-जीवन का बंधन हैं। नारी के वास्तविक आभूषण तो उसके गुण हैं।

प्र.11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2x4=8

(क) कवि ने 'श्रीबज्रदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें ससांर रूपी मंदिर दीपक क्यों कहा है?

उत्तर : देव जी ने 'श्रीबज्रदूलह' श्री कृष्ण भगवान के लिए प्रयुक्त किया है। वे सारे संसार में सबसे सुंदर, सजीले, उज्ज्वल और महिमावान हैं। देव जी के अनुसार जिस प्रकार एक दीपक मंदिर में प्रकाश एवं पवित्रता का सूचक है, उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी इस संसाररूपी मंदिर - में ईश्वरीय आभा का प्रकाश एवं पवित्रता का संचार करते हैं। अर्थात् उनकी सौंदर्य की अनुपम छटा सारे संसार को मोहित कर देती है।

(ख) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' के आधार पर श्रीराम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : श्रीराम अत्यंत विनयशील तथा संयमी थे। वे अपने से बड़ी आयु के लोगों का सदैव सम्मान करते थे।

(ग) 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेत के मैदान दूर पानी की चमक दिखाई देती है हम वह जाकर देखते है तो कुछ नहीं मिलता प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इसका प्रयोग कविता में प्रभुता की खोज में भटकने के

संदर्भ में हुआ है। इस तृष्णा में फँसकर मनुष्य हिरन की भाँति भ्रम में पड़ा हुआ भटकता रहता है।

(घ) संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर : संगतकार जैसे व्यक्ति निम्नलिखित क्षेत्रों में मिलते हैं; जैसे -

1. सिनेमा के क्षेत्र में - फिल्म में अनेकों सह कलाकार, डुप्लीकेट, सह नर्तक व स्टंटमैन होते हैं।
2. भवन निर्माण क्षेत्र में - मज़दूर जो भवन का निर्माण करते हैं।

प्र. 12. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाईयों का मुकाबला करते है। सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए। 4

उत्तर : 'साना साना हाथ जोडि' पाठ में देश की सीमा पर तैनात फौजियों की चर्चा की गई है। वस्तुत: सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कटिबध्द रहते है। देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते हैं। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए।

इन सैनिकों के जीवन से हमें अटूट देशप्रेम, त्याग, निष्ठा, समर्पण आदि मूल्यों को ह जीवन में अपनाना चाहिए।

खंड - घ

प्र. 13. निम्नलिखित में से किसी एक विषय निबंध पर लिखिए : 10

जहाँ चाह वहाँ राह

प्रत्येक व्यकित के मन में किसी न किसी लक्ष्य को पाने की कामना रहती है। कई बार हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल होते हैं और अक्सर इसका दोष हम दुर्भाग्य को देते है। हमारी असफलता के दोषी हम खुद है, हमें हार माने बिना दृढ़ इच्छा और योजना के साथ फिर लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। असफलता सफलता की सीढ़ी है, हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए कि यह असंभव है।

नेपोलियन के अनुसार असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है। मनुष्य को स्थिर इच्छाशक्ति को बनाए हुए, अंतिम साँस तक अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

अँग्रेजी भाषा में भी कहा जाता है, **Where there Is a wIll, there Is a way"** पाणिनी, संस्कृत भाषा के महान वैयाकरण जब बच्चे थे और उसकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए उसकी माँ उन्हें शिक्षक के यहाँ ले गई, शिक्षक ने कहा उनकी हथेली में शिक्षा के लिए कोई रेखा नहीं है उन्होंने अपने हाथ में चाकू से रेखा खीची और उस शिक्षक के पास गए। यह देखकर शिक्षक ने कहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति से कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसीलिए कहते है - 'जहाँ चाह वहाँ राह'।

अथवा

'कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण'

हमारे भारतीय समाज में नारी को नारायणी कहा गया है। नारी को देवी का दर्जा दिया गया। कहा गया है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही नारी को 'गृह देवी' या 'गृह लक्ष्मी'

कहा जाता है। प्राचीन समय में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। परंतु मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गयी। उसका जीवन घर की चारदीवारी तक सीमित हो गया। नारी को परदे में रहने के लिए विवश किया गया।

आज वर्तमान युग में नारी पुरुष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है।

नर और नारी एक सिक्के के दो पहलु की तरह है। स्त्री-पुरुष जीवन-रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ साथ स्त्री का भी शिक्षित होना जरुरी है। यदि माता सुशिक्षित होगी तो उसकी संतान भी सुशील और शिक्षित होगी। शिक्षित गृहणी पति के कार्यों में हाथ बँटा सकती है, परिवार को सुचारु रूप से चला सकती है।

आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। परंतु स्त्री पुरुष एक समान के नारे लगाने के बावजूद समाज में नारी का शोषण हो रहा है। स्त्रियों को पुरुष से कम वेतन दिया जाता है। साथ ही पुरुष प्रधान में समाज में अपनी योग्यता के बावजूद आगे बढ़ने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

साथ ही घर की सभी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है, बच्चों की देखभाल और सास-ससुर की सेवा अलग से करनी पड़ती है। इस के लिए पुरुषों को आगे बढ़कर उसकी मदद करनी चाहिए, उसकी कामयाबी के लिए उसे सराहना चाहिए।

नारी का योगदान समाज में सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन,पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। अतः नारी को कभी कम नहीं आँकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए। नारी त्याग और ममता की मूर्ति है उसे सम्मान और प्यार मिलेगा तो निश्चित वह हमें बेहतर भविष्य प्रदान करेंगी।

प्र. 14. हिन्दी-दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए। 5

सेवा में,
नवभारत टाईम्स
मुंबई

विषय : हिन्दी गोष्टी सभा की जानकारी प्रकाशनार्थ हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपके इस प्रसिद्ध अखबार के द्वारा हमारे विद्यालय में आयोजित की गई हिन्दी गोष्टी की जानकारी को प्रकाशन करवाना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर गोष्टी का आयोजन किया गया था। जिसमें अनेक सम्मानीय हिन्दी लेखकों ने भाग लिया था। गोष्टी का विषय 'वर्तमान परिवेश में हिन्दी की महत्ता' था। इस विषय पर सबने अपने-अपने विचारों से छात्रों को जानकारी से ओतप्रोत और लाभान्वित कर दिया।

आशा करता हूँ आप जल्द से जल्द हमारी इस गोष्टी को अपने पत्र में स्थान देगें।

भवदीय
रमाकांत शुक्ला
दिनाँक - 15 सितम्बर, 2015

अथवा

दसवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? अपने भावी कार्यक्रम के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रिय अमर

नमस्ते।

कल ही परीक्षा का बोझ सिर से उतरा। मेरे सभी प्रश्नपत्र काफी अच्छे गए हैं और करीब 95 अंक प्राप्त होने की आशा है।

कल से यह सोच रहा हूँ कि दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद क्या करुँगा। मेरे पिताजी चाहते है मैं भी उनकी तरह वकालत करूँ। मैं इंजीनियर बनना चाहता हूँ। यह मेरा बचपन का सपना है।
मैं पिताजी को मनाने का प्रयास करूँगा। फिर भी इस विषय में तुम्हारी राय जानना चाहूँगा। तुम्हारे पत्र का इंतजार करुँगा। शेष कुशल है।
तुम्हारा मित्र
राज

प्र. 15. निम्नलिखित विज्ञापन का प्रारुप (नमुना) तैयार कीजिए : 5
गुलाब जामुन मिक्स का विज्ञापन तैयार कीजिए।

माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स
अब गुलाब जामुन घर पर बनाना हुआ आसान,
माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स के साथ